पञ्चमः पाठः

'कार्यं वा साधयेयम् देहं वा पातयेयम्'

(या तो कार्य को सिद्ध करूँगा अथवा शरीर को नष्ट करूँगा)

[पण्डित अम्बिकादत्त व्यास द्वारा विरचित 'शिवराज विजय' संस्कृत का गौरवपूर्ण उपन्यास माना जाता है। इसमें छत्रपति शिवाजी के जीवन की गौरवमयी पृष्ठभूमि का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत अंश 'शिवराज विजय' के 'चतुर्थनिश्वास' से संग्रहीत है। शिवाजी का विश्वासपात्र अनुचर रघुवीर सिंह उनका गोपनीय आवश्यक पत्र लेकर अनेक कष्टों का सामना करते हुए सिंहदुर्ग से तोरणदुर्ग में प्रवेश करता है। अनुचर ने अपनी विश्वसनीयता का पूर्ण परिचय दिया है। प्रकृति उसके सम्मुख ऐसी भयंकर स्थिति उत्पन्न करती है कि वह आगे न बढ़ सके परन्तु उसने प्रतिज्ञा कर ली थी 'कार्यं वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम्'। इस दृढ़ प्रतिज्ञा को पूरा करके ही उसे सन्तोष प्राप्त हुआ।]

शिववीरस्य कोऽपि सेवकः श्रीरघुवीरसिंहः तस्यावश्यकं पत्रञ्चादाय महताक्लेशेन सिंहदुर्गात् तोरणदुर्गं प्रयाति।

मासोऽयमाषाढस्यास्ति समयश्च सायम् अस्तं जिगमिषुर्भगवान् भास्करः, सिन्दूर-द्रव-स्नातानामिव वरुण-दिगवलम्बिनामरुण- वारिवाहानामभ्यन्तरं प्रविष्टः। कलविङ्काः नीडेषु प्रतिनिवर्तन्ते। वनानि प्रतिक्षणमधिकाधिकां श्यामतां कलयन्ति। अथाकस्मात् परितो मेघमाला पर्वतश्रेणिरिव प्रादुर्भूय समस्तं गगनतलं प्रावृणोत्।

अस्मिन् समये एकः षोडशवर्षदेशीयो गौरो युवा हयेन पर्वतश्रेणीरुपर्युपरि गच्छति स्म। एष सुघटित-दृढ-शरीरः, श्यामश्यामैर्गुच्छगुच्छैः कुञ्चितकुञ्चितैः कचकलापैः कमनीयकपोलपालिः, दूरागमनायास-वशेन-स्वेदबिन्दुव्रजेन समाच्छादित-ललाट-कपोलनासाग्रोत्तरोष्ठः, प्रसन्नवदनाम्भोजः, हरितोष्णीषशोभितः, हरितेनैव च कञ्चुकेन प्रकटीकृत-व्यूढ-गूढचरता-कार्यः, कोऽपि शिववीरस्य विश्वासपात्रम्, सिंहदुर्गात् तस्यैव पत्रमादाय, तोरणदुर्गं प्रयाति स्म।

तावदकस्मादुत्थितो महान् झञ्झावातः। एकः सायं समयप्रयुक्तः स्वभाववृत्तोऽन्धकारः स च द्विगुणितो मेघमालाभिः। झञ्झावातोद्धूतै रेणुभिः शीर्णपत्रैः कुसुमपरागैः शुष्कपुष्पैश्च पुनरेष द्वैगुण्यं प्राप्तः। इहपर्वतश्रेणीतः पर्वतश्रेणीः, वनाद् वनानि, शिखराच्छिखराणि, प्रपातात् प्रपातान्, अधित्यकातोऽधित्यकाः, उपत्याकात उपत्यकाः, न कोऽपि सरलो मार्गः, पन्था अपि नावलोक्यते, क्षणे क्षणे हयस्य खुराश्चिक्कणपाषाणखण्डेषु प्रस्खलन्ति, पदे पदे दोधूयमाना वृक्षशाखाः सम्मुखमाघ्नन्ति, परं दृढ-संकल्पोऽयं सादी न स्वकार्याद् विरमति।

कदाचित् किञ्चिद् भीत इव घोटकः पादाभ्यामुत्तिष्ठति, कदाचिच्चलन्नकस्मात् परिवर्तते, कदाचिदुत्प्लुत्य च गच्छति। परमेष वीरो वल्गां संभालयन्, मध्ये-मध्ये सैन्धवस्य स्कन्धौ कन्धराञ्च करतलेनऽऽस्फोटयन्, चुचुत्कारेण सान्त्वयंश्च न स्वकार्याद् विरमति। यावदेकस्यां दिशि नयने विक्षिपन्ती, कर्णौ स्फोटयन्ती, अवलोचकान् कम्पयन्ती, वन्यांस्त्रासयन्ती, गगनं कर्त्तयन्ती, मेघान् सौवर्ण-कषयेवघ्नन्ती, अन्धकारमग्निना दहन्ती इव चपला चमत्करोति, तावदन्यस्यामपि दिशि ज्वालाजालेन बलाहकानावृणोति, स्फुरणोत्तरं स्फुरणंगर्ज्जनोत्तरं गर्ज्जनमिति परः शतः-शतघ्नी-प्रचार-जन्येनेव, महाशब्देन पर्यपूर्यत साऽरण्यानी। परमधुनाऽपि 'कार्यं वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम्' इति कृतप्रतिज्ञोऽसौ शिववीर-चरो न निजकार्यान्निवर्त्तते।

यस्याध्यक्षः स्वयं परिश्रमी, कथं स न स्यात् स्वयं परिश्रमी? यस्य प्रभुः स्वयं अद्भुतसाहसः, कथं स न भवेत् स्वयं तथा? यस्य स्वामी स्वयमापदो न गणयति, कथं स गणयेदापदः? यस्य च महाराजः स्वयंसङ्कल्पितं निश्चयेन साधयति, कथं स च साधयेत् स्व-संकल्पितम्? अस्त्येष महाराज-शिववीरस्य दयापात्रं चरः, तत्कथमेषः झञ्झा-विभीषिकाभिर्विभीषितः प्रभु-कार्यं विगणयेत्? तदितोऽप्येष तथैव त्वरितमश्वं चालयंश्चलति।

काठिन्य निवारण

प्रयाति = जाता है। **जिगमिषुः** = जाने का इच्छुक। **भास्करः** = सूर्य। **वरुणदिक्** = पश्चिम दिशा। **स्नातानामिव** = स्नान किये हुए की तरह से। **कलविङ्काः** = गौरैया नाम की चिड़िया। **कलयन्ति** = धारण करती हैं। **परितः** = चारों ओर। **प्रादुर्भूय** = प्रकट होकर। **प्रावृणोत्** = ढक लिया। **हयेन** = घोड़े के द्वारा। **कचकलापैः** = बालों के समूह से। **स्वेदबिन्दुव्रजेन** = पसीने की बूँद बहने से। **कञ्चुकेन** = कुर्ते से। **व्यूढ़** = दृढ़। **गूढचरता** = जासूसी। **झंझावातः** = तूफान। **द्विगुणितः** = दोगुना। **रेणुभिः** = धूल समूह से। **शीर्णपत्रैः** = नष्ट पत्तोंवाले। **पन्थाः** = रास्ता। **प्रस्खलन्ति** = पिघलते हैं। **उपत्यका** = पर्वत की घाटी। **चिक्कण** = चिकने। **दोधूयमाना** = हिलते हुए। **सादी** = घुड़सवार। **उत्प्लुत्य** = उछलकर। **घोटकः** = घोड़ा। **वल्गाम्** = लगाम। **सैन्धवस्य** = घोड़े का। **कन्धरा** = गर्दन। = **आस्फोटयन्** = थपथपाते हुए। **चुचुत्कारेण** = पुचकारते हुए। **बलाहकान्** = बादलों को। **स्फुरण** = चमकना। **शतघ्नीप्रचार** = तोप चलाने से। **अरण्यानी** = जंगल। **साधयेयम्** = सिद्ध करूँगा। **पातयेयम्** = नष्ट कर दूँगा। **निवर्तते** = रुकता है। **विभीषिका** = भय।

अभ्यास प्रश्न

1. 'कार्यं वा साधयेयम् देहं वा पातयेयम्' पाठ का सारांश हिन्दी में लिखिए। **(2020MR)**
2. निम्नलिखित गद्यावतरणों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–
   (क) अस्मिन् समये ..... प्रयाति स्म। **(2019AU)**
   (ख) इहपर्वतश्रेणीतः ..... स्वकार्याद् विरमति।
   (ग) मासोऽयमाषाढस्यास्ति ..... प्रावृणोत्।
   (घ) यस्याध्यक्षः ..... चालयंश्चलति।
   (ङ) कदाचित् किञ्चिद् ..... चपला चमत्करोति। **(2019AR)**
3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए–
   (क) 'कार्यं वा साधयेयम् देहं वा पातयेयम्' यह प्रतिज्ञा किसने की थी?
   (ख) अश्वारोही युवक के शौर्य का वर्णन कीजिए।
   (ग) प्राकृतिक दृश्य की भयानकता से युवक भयभीत क्यों नहीं होता?
   (घ) शिववीर के पत्रवाहक सेवक का क्या नाम था?
   (ङ) रघुवीर सिंह किसका विश्वासपात्र सेवक था?
   (च) रघुवीर सिंह किसका गोपनीय पत्र ले जा रहा था?
   (छ) 'कार्यं वा साधयेयम् देहं वा पातयेयम्' का मूल उद्देश्य क्या है?
   (ज) 'कार्यं वा साधयेयम् देहं वा पातयेयम्' शीर्षक का क्या अर्थ है?
   (झ) 'कार्यं वा साधयेयम् देहं वा पातयेयम्' पाठ का सारांश लिखिए।
   (ञ) शिवाजी के वीर अनुचर रघुवीर सिंह का प्रतिज्ञा वाक्य क्या था?
4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–
   (क) रघुवीरः कः आसीत्?
   (ख) श्रीरघुवीरः शिववरस्य आवश्यक पत्रञ्चादस्य कुत्र गच्छतिस्म?
5. निम्न शब्दों को संस्कृत के वाक्यों में प्रयोग कीजिए–
   कोऽपि, भास्करः, अस्मिन्, कदाचित्, चपला, यस्य, साधयेयम्।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

शिवाजी की जीवनी लिखिए।